श्री भक्तामर - महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, करो नित प्रात, भक्ति मन लाई।
सब संकट जायें नशाई।।

जो ज्ञान-मान-मतवारे थे, मुनि मानतुंग से हारे थे।
उन चतुराई से नृपति लिया, बहकाई।। सब संकट...... ।। १ ।।

मुनि जी को नृपति बुलाया था, सैनिक जा हुक्म सुनाया था।
मुनि वीतराग को आज्ञा नहीं सुहाई।। सब संकट...... ।। २ ।।

उपसर्ग घोर तब आया था, बलपूर्वक पकड़ मंगाया था।
हथकड़ी बेड़ियों से तन दिया बंधाई।। सब संकट...... ।। ३ ।।

मुनि काराग्रह भिजवाये थे, अड़तालिस ताले लगाये थे।
क्रोधित नृप बाहर पहरा दिया बिठाई।। सब संकट...... ।। ४ ।।

मुनि शान्तभाव अपनाया था, श्री आदिनाथ को ध्याया था।
हो ध्यान-मग्न भक्तामर दिया बनाई।। सब संकट...... ।। ५ ।।

सब बन्धन टूट गये मुनि के, ताले सब स्वयं खुले उनके।
काराग्रह से आ बाहर दिये दिखाई।। सब संकट...... ।। ६ ।।

राजा नत होकर आया था, अपराध क्षमा करवाया था।
मुनि के चरणों में अनुपम भक्ति दिखाई।। सब संकट...... ।। ७ ।।

जो पाठ भक्ति से करता है, नित ऋषभ-चरण चित धरता है।
जो ऋद्धि-मन्त्र का विधिवत जाप कराई।। सब संकट...... ।। ८ ।।

भय विघ्न उपद्रव टलते हैं विपदा के दिवस बदलते हैं।
सब मन वांछित हों पूर्ण, शान्ति छा जाई।। सब संकट...... ।। ९ ।।

जो वीतराग आराधन हैं, आतम उन्नति का साधन हैं।
उससे प्राणी का भव बन्धन कट जाई।। सब संकट...... ।। १० ।।

'कौशल' सुभक्ति को पहिचानो, संसार-दृष्टि बन्धन जानो।
लो भक्तामर से आत्म-ज्योति प्रकटाई ।। सब संकट...... ।। ११ ।।